'यात्री' क काव्यमे मिथिलाक वास्तविक चित्रण।

- प्रोफेसर वीरेन्द्र झा
पटना विश्वविद्यालय, पटना।

'यात्री' मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर छथि। अपन एहन विशिष्ट साहित्यकारपर कोनो भाषा गौरव कए सकैत अछि। ई अपन माटि-पानि आ परिजन-पुरजनक व्यथा-कथाक अभिव्यक्ति ठेठ शब्दावलीमे कए अमर भए गेलाह। हिनक रचना मोनकेँ आह्लादित आ हृदयकेँ स्पर्श करैत अछि। ई मिथिलाक चित्रण अपन रचनामे कएलनि, विशेषतः मैथिलीमे। आनो भाषाक हिनक रचनामे मिथिलाक चित्रण अनेक रूपमे भेल अछि।

ई चारि भाषा आ विविध विधामे रचनारत रहलाह। हिनक रचनामे दलित, उपेक्षित, पीड़ित, शोषित इत्यादि गरीब-गुरबा विशेष रूपसँ स्थान पओलक अछि, जे उपेक्षितो छलैक। ई स्त्रीगणक यातनामय जीवन, अनुसूचित जाति/जनजाति पर अत्याचार-अनाचार, शोषण आदिकेँ सहानुभूतिपूर्वक प्रमुखतासँ चित्रित कएलनि। हिनका लोकनिक प्रति 'यात्री' क मोनमे अगाध प्रेम ओ ममता छलनि। स्त्री-समाजक पराधीनताक जे व्यथा-कथा आ दलित-दमनक जे विसंगति समाजमे रहलैक अछि, तकर उद्घाटन-उद्बोधन हृदयस्पर्शी ढंगेँ अपन रचनामे कएलनि, से अकझोरि कए राखि दैछ आ सोचबाक लेल विवश करैछ।

हिनक 'यात्री' आ 'नागार्जुन' दुनू नामसँ रचित सामग्रीकेँ मिला देलापर जाहि विविधता ओ व्यापकता भेटैत, ओहन भारतवर्षक अछि। हिनक रचनामे मिथिलाक ग्राम्य जीवन ओ संस्कृति तँ अभिव्यक्ति पबैत करलक संगहि देश-गौरव सेहो उद्घाटित भेल अछि।

जानकार लोकनिक कहब छनि जे जहिना कसक महान् साहित्यकार चेष्टा कोनो विषयपर कथा लिखि सकैत छथि, तहिना ई कोनो छेरसँ छोटो विषयकेँ कवितामे स्थापित कए सकैत छलाह। हिनका ई नीक नहुँ लागैत छलनि जे कविताक लेल विषय नहि, अपितु ओकर कथ्य महत्वपूर्ण होइत छैक। तेँ हिनक काव्यमे विषये नहि,

अपितु कविक तिविद्यता अर्थेत अछि। हिनक हिन्दी कविताने सेहो मैथिलिएमे लिखल गेल कविताक विकास-विस्तार अर्थात् आगूक बात अछि।

कविक की दायित्व होइत छैक, तकर बोध हिनका छलनि, तेँ अपन समानधर्मीकेँ आह्वान करैत कहैत छथिन-

''अन्न ने छै कैंचा ने छै कौड़ी ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक रे ?
उठह कवि, तों दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक-दल चढ़तैक रे।''

पहिने वृद्ध-विवाहक कुप्रथा आम छलैक, मुदा आब कानून आ शिक्षाक प्रचार-प्रसारक कारणेँ ओ स्थिति नहि छैक। तत्कालीन वृद्ध-विवाह पर व्यंग्य-बाण चलबैत 'यात्री' जी कहैत छथि-

''माथ छलन्हि औन्हल खाँच जकाँ
जीह गाँजक सोटी माछ जकाँ
दाँत ने रहन्हि, निर्दंत रहथि
बूढ़ि रहथि, खोखा बसन्त रहथि
खा रहल छलाह पान तइपर
कन्यागत दऽ छलथीन्ह जाज तइपर।''

घटकमे सौन्दर्यबोधक अभावे नहि, अपितु ओ घाघक होइत छलाह-

''हाथमे हुनक नौसदानी रहन्हि
ख्याल रहन्हि, तुरत कमानी रहन्हि
उसरगल छलाह कि दनही छलाह
कुकुरक चिबौल पनही छलाह
+ + +
निमूह धनक जड़ि करैत रहथि
पौंजि पाटीमे चेफड़ी सटैत रहथि''

परजीवी घटकराज पंजी-प्रथाक नामपर कतेको जीवन-केँ नरक बना दैत छल। नाश कए दैत छल। कन्या हाहाकार कए उठैत छलि; ओकर मोन पुरुष जातिक प्रति घृणासँ भरि उठैत छलैक-

''ओ रे राक्षस, ओ रे पुरुषक जाति
तोरे मारलि हम सब मरि रहलि छी
किकिया रहलि छी, कुहरि रहलि छी
मोल लऽ तों हमरा तों टका द'क'
कनबउ छें बाप भ'क', काका भ'क'

एही प्रकारेँ विस्तारपूर्वक विचार कएल जा सकैछ जे 'यात्री' केँ अपन समाज, देस-कोस आदिक प्रति अत्यन्त लगाओ छलनि; एकर सूक्ष्म पर्यवेक्षण आ मर्मस्पर्शी चित्रण अपन रचनामे कएने छथि। मैथिलिए रचनाक विकास-विस्तार हिन्दीमे सेहो भेलनि।

वीरेन्द्र
19.5.'20
मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय,
पटना-800 005
मोबाइल नम्बर - 9470838133